आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2715 • उदयपुर, बुधवार 01 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

भारतीय सेना के सहयोग से नारायण सेवा का शिविर सम्पन्न

त्रिदिवसीय शिविर में नोर्थ कश्मीर के 410 दिव्यांगों को मिली चिकित्सा

नारायण सेवा संस्थान द्वारा गान्दरबल, श्रीनगर के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में बसे दिव्यांगों के लिए बुसन बटालियन, कंगन और 34 असम राइफल्स के सौजन्य से कंगन आर्मी गुडविल सैकेण्डरी स्कूल में त्रिदिवसीय कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने विज्ञप्ति जारी कर बताया कि मेजर अनूप व केप्टन विपुल की मौजूदगी में तीनों दिन तक चले शिविर में संस्थान के डॉक्टर्स एवं प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिस्ट टीम ने 410 रोगियों को परामर्श दिया। 78 दिव्यांगों का केलीपर्स और कृत्रिम हाथ–पैर का माप लिया तथा 90 भाई–बहनों को शल्य चिकित्सा के लिए चिन्हित किया गया। शिविर में 70 फौजी–जवानों की टीम सहायता में लगी हुई थी। वही संस्थान की 15 सदस्य टीम ने अपनी सेवाएं दी। उन्होनें कहा कुछ सप्ताह बाद आर्मी के सहयोग से कृत्रिम अंग, केलीपर्स और सहायक उपकरण वितरण केम्प स्थानीय ग्रामीणों के लिए लगाया जाएगा।

ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता–मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 17 मई को कैसर हॉस्पीटल आमखों, ग्वालियर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लांयस क्लब, ग्वालियर आस्था रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 169, कृत्रिम अंग माप 55, कैलिपर माप 20 की सेवा हुई तथा 06 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि डॉ. बी.आर. जी श्रीवास्तव (कैंसर हॉस्पीटल, डायरेक्टर), अध्यक्षता श्रीमती रजनी जी अग्रवाल (अध्यक्ष, लांयस क्लब आस्था), विशिष्ट अतिथि श्री जगदीश शरण जी गुप्ता (रीजन चेयरपर्सन), श्रीमान् तालीब जी खान (जोन चेयरपर्सन), श्रीमान् रमेश जी श्रीवास्तव (गाइडिंग लायन)रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री हरीश सिंह जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक : 5 जून, 2022
▪ औरंगाबाद, बिहार
▪ कृषि उपज मण्डी, ओरछा रोड, पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी, म.प्र.
▪ जेबीएफ मेडिकल सेंटर, भारतीय ग्राम सदल्लापुर,
राम धर्म कांठा के पास, गजरौला, उमरोह, उ.प्र.
▪ हनुमान व्यायामशाला, पटेल मैदान के पास, अजमेर, राज.
इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. :0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

सबसे बड़ी तपस्या

नर सेवा ही नारायण सेवा है। मानव सेवा से बड़ी न कोई तपस्या है न ही धर्म। जरूरतमंदों व पीड़ितों की सेवा से ही ईश्वर प्रसन्न होते हैं। यदि मार्ग में ऐसा कोइ भी दुःखी–पीड़ित जन मिले तो ठहर कर उसकी यथा योग्य सेवा अवश्य करें।

सत्यनगर का राजा सत्यप्रतापसिंह अत्यंत न्यायप्रिय शासक था। एक बार उसे पता चला कि सौम्यदेव नामक एक ऋषि अनेक सालों से लोहे का एक डंडा जमीन में गाड़कर तपस्या कर रहे हैं और उनके तप के प्रभाव से डंडे में कुछ अंकुर फूट कर फूल–पत्ते निकल रहे हैं और जब वह अपनी तपस्या में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेंगे तो उनका डंडा फूल–पत्तों से भर जाएगा। सत्यप्रताप नेसोचा कि यदि उनके तप में इतना बल है कि लोहे के डंडे में भी अंकुर फूट कर फूल–पत्ते निकल सकते हैं तो फिर मैं भी क्यों न तप करके अपना जीवन सार्थक बनाऊं। यह सोच करवह ऋषि के समीप लोहे का डंडा गाड़कर तपस्या करने लगा। संयोगवश उसी रात जोर का तूफान आया। मूसलाधार बारिश होने लगी। राजा और ऋषि दोनों की मौसम की परवाह न कर तपस्या करने लगा। संयोगवश उसी रात जोर का तूफान आया। मूसलाधार बारिश होने लगी। राजा और ऋषि दोनों ही बारिश की परवाह न कर तपस्या में मगन रहे। कुछ देर बाद एक व्यक्ति बुरी तरह भीगा हुआ ठंड से कांपता आया। उसने ऋषि से ठहरने की जगह के बारे में पूछा पर ऋषि ने आंख खोलकर भी नहीं देखा। निराश होकर वह राजा सत्यप्रताप के पास पहुंचा और गिर पड़ा। राजा ने उसकी इतनी बुरी हालत देखकर उसे उठाया। नजदीक ही एक कुटिया नजर आई। उसने उस व्यक्ति को कुटियां मे लिटाया और उसके समीप आग जलाकर गर्माहट पैदा की। गर्माहट मिलने से व्यक्ति होश में आ गया। इसके बाद राजा ने इसके बाद राजा ने कुछ जड़ी–बुटी पीसकर पिलाई। कुछ ही देर बाद वह व्यक्ति बिल्कुल ठीक हो गया। सुबह होने पर राजा जब उस व्यक्ति के साथ कुटिया से बाहर आया तो यह देखकर हैरान रह गया जो लोहे का डंडा उसने गाड़ा था। वह ताजे फूल–पत्तों से भरकर झुक गया। इसके बाद राजा ने ऋषि के डंडे की ओर देखा। ऋषि के लौहे दण्ड में थोड़े बहुत निकले फूल–पत्ते भी मुरझा गए थे। राजा समझ गया कि मानव सेवा से बड़ी तपस्या कोई और नहीं। वह अपने राज्य में वापस लौट गया और प्रजा का समुचित देखभाल करने लगा।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ये कथा व्यवहार की कथा। विन्रमता और विनय हनुमान जी के जो दास बन जावे। हनुमान जी की गाथा के प्रभु के भक्त बन जावे।

हनुमान चालीसा रोज करना चाहिए ।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपिस तिहुलोक उजागर।
ऐसे पवन पुत्र हनुमान जी जिनमें
इतना कनक भूधराकार शरीरा,
समर भयंकर अति बलबीरा।।

इतनी महानता इतने बड़े हो गये। कभी सुरसा के सामने छोटे हो गये कभी मशक समान रुप कपि धरि कभी मच्छर जैसा बन गये। कभी विप्र का रुप धारण कर लिया ऐसे हनुमान जी महाराज सीता माता जी को कहा माते, आप निश्चिंत रहो। अब मैंने आपके दर्शन कर लिए। ये व्यवहार की कथा, ये सुन्दरकाण्ड़ सप्ताह में एक बार करना चाहिए और आपको लगे एक दिन में दो घण्टे डेढ़ घण्टा लगता है दो बार में करलो। आधा–आधा करलो वो कहते हैं अनख आलख राम कथा मंगल दिश दशहु भगवान का नाम राम राम रटता रहो भनक पड़ेगी कान। कबहु के दीन दयाल के भनक पड़ेगी राम नाम की लूट है। आप तो बचपन में सुनते होंगे मेरे पिताजी कहे कीर्तन में राम– नाम की लूट और आगे क्या है लूट सके तो लूट। अन्तकाल पछतायेगा। जब प्राण जायेंगे तो छूटेंगे। हनुमान जी राजी हो गये। वहाँ भी समुद्र में तैर करके और मधुबन में आ गये अंगद जी ने देखा हनुमान जी राजी होकर के आये। कोई राजी होकर के आवे तो समझो काम बन गया महाराज। और बिना कहे भी समझो काम बन गया और कोई उदास आवे

मुंह लटका कर आवे अरे
यूं ना अलास में बैठो,
जिस्म से कछु कामलो।
हाथों से खिदमत करो,
मुंह से प्रभु का नामलो।।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

मनोहर के परिवार को मिला सहारा

मैं मनोहर लाल मीणा 38 साल अपने 4 बच्चों व पत्नी के साथ उदयपुर की सरू पंचायत में रहता हूं। तीन साल पहले पास के स्कूल में बिजली ठीक करने गया था। अचानक करंट लगने से कमर और रीढ़ की हड्डी क्षतिग्रस्त हो गई। अब भी चल–फिर नहीं सकता। कमर के नीचे से पूरी तरह विकलांग हूं, इलाज हेतु 2 लाख में खेत भी बेच दिया, फिर भी ठीक नहीं हुआ।

तीन साल से बिस्तर पर पड़ा हूं। घर में कमाने वाला कोई नहीं है, इसलिए बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी। एक बच्चा काम पर जाता है, पत्नी–बच्चा मजदूरी करके सबका गुजारा कर रहे हैं। कई बार पास–पड़ोसी खाना दे जाते हैं। मेरी स्थिति की जानकारी नारायण सेवा संस्थान को सरपंच और पड़ोसियों ने दी। संस्थान ने हमें एक माह की राशन सामग्री (जिसमें आटा, दाल,नमक–मसाले, तेल, शक्कर, चायपत्ती) आदि की मदद की। हमें बहुत राहत मिली। इलाज का आश्वासन भी दिया कि मदद करेंगे। राशन हर माह मिल रहा है।

सम्पादकीय

प्रगति एक सतत् प्रक्रिया है। प्रगतिशील व्यक्ति ही समय के साथ सामंजस्य बैठा सकता है। यों प्रगति का अर्थ वर्तमान में संकुचित होकर केवल आर्थिक क्षेत्र का मूल्यांकन ही होता जा रहा है। वस्तुतः प्रगति तो सर्वांगीणहै। प्रगति चहुँमुखी हो तभी वह संतुलित कहलाती है। आज आर्थिक प्रगति पर तो सबका पूरा–पूरा ध्यान रहता है किन्तु जो प्रगति मानव का मूल्य स्थापित करती है उस तरफ भी ध्यान अपेक्षित होता है।

प्रगति को वैचारिकता, मानवीयता तथा पावनता से भी जोड़ा जाना आवश्यक है। मूल्यांकन के समय इन क्षेत्रों को भी जोड़ना होगा तभी सर्वांगीण प्रगति होगी। आज वैश्विक स्वास्थ्य संकट है तो इन कसौटियों की प्रासंगिकता भी बढ़ गई है। विश्व में कोई भी देश मानवीय सुरक्षा के उपाय खोजे तो उसे सबके लिये उपयोगी बनाने की भी पहल हो। यो मानव में परहित भाव जन्मजात होता है किन्तु परिस्थिति के कारण वह क्षीण हो सकता है। मानव सेवा का भाव पुनः पूर्ण रूप से उदित हो यह भी प्रगति का एक प्रकार ही है। यों सभी इस दिशा में प्रयासरत हैं पर समवेत प्रयास से ही प्रगति दृष्टिगत होगी।

कुछ काव्यमय

मैं मेरा मेरे लिये
यह है घातक सोच।
इसमें कहां समानता,
यह प्रगति में पोच।।
मैं सबका मेरे सभी,
यही है सोच उदार।
तभी संतुलित बन सके,
प्रगतिशील सुविचार।।

अपनों से अपनी बात

सेवा बनाये दिनचर्या का अंग

सुबह जल्दी, बहुत जल्दी उठना, दुकान पर जाना, भट्टी चेतन करना, आलू उबालना, मसाले तैयार करना, दूध फेंटना और भी कई काम। उधर दुकान में झाड़ू लगाना, पानी भरना आदि। और यह कार्यक्रम रात में, देर रात तक कड़ाहियों के मांजनें और भट्टी ठंडी करने तक चलता रहता है। यह दिनचर्या, बल्कि कहना चाहिए जीवनचर्या है एक हलवाई की जो रात–दिन अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए धनोपार्जन के काम में जुटा रहता है।

यदि यही व्यक्ति किसी दिन इस दिनचर्या से हट के कोई अन्य कार्य करे जिसमें धनोपार्जन की गुंजाईश न हो, उदाहरणार्थ– निःशुल्क सेवा आदि, तब उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ेगा– "यह कार्य करने में मुझे क्या लाभ होगा, कहाँ मेरे नाम का उल्लेख

होगा– अथवा इतने घंटों की कार्य–हानि के अलावा कुछ भी हाथ न लगेगा।" उस दिन घर लौटने पर उसकी पत्नी भी कहेगी –"आज तो आपने काफी काम किया है, थक गए होंगे।" सामान्य कार्यक्रम के अंतर्गत सुबह पांच बजे से रात ग्यारह बजे तक काम करने के उपरांत भी घर पहुंचने पर ऐसी टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती। विचार किया जाय तो इसके पीछे दो कारण अनुभव होते हैं –धनोपार्जन और सामान्य दिनचर्या।

हलवाई ही क्यों, न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति का –संभवतः हमारा और आपका भी दृष्टिकोण इससे बहुत अधिक भिन्न नहीं है। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक कार्य को धन की तुला पर तौलता है। सम्पूर्ण दिनचर्या ही धन पर आधारित हो गई है। लीक से हट कर कोई कार्य थकावट का कारण बन जाता है। वस्तुतः हमारी सोच ही ऐसी हो गई है। सेवा कार्य को हमने अपनी दिनचर्या में गिना ही नहीं। यही कारण है कि यह कार्य हमें "अतिरिक्त कार्य" लगता है, इसमें थकान होती है, संभवतः नाम न होने का दुःख भी होता है। आइये, हम अपने सोच को बदलने का प्रयत्न करें। सेवा कार्य को भी दिनचर्या के अंग के रूप मानें ताकि इसके लिए अलग से प्रयास न करना पड़े, अलग से सोचने की आवश्यकता न पड़े। जीवन के अन्य कार्यों के साथ–साथ सेवा रूपी प्रभु कार्य भी निर्विघ्न चलता रहे।

–कैलाश 'मानव'

जो ज्ञान आचरण में नहीं, वह निरर्थक

अच्छी बातें सुनना पढ़ना ही काफी नहीं है इसे अपने जीवन में अमल करना भी बेहद जरूरी है। वरना आपका सुनना पढ़ना बेकार हो जाएगा। जब भी कोई अच्छी सीख मिले उसे तुरंत नोट कर ले। उसे खुद के व्यक्तित्व में आदत में डालने की कोशिश करें तभी जीवन सार्थक होगा।

एक किसान बहुत सारे बीज लेकर खेत में बोने के लिए निकला। कुछ बीज रास्ते में गिर गए तो कुछ पक्षियों ने चुग लिए, कुछ पथरीली जमीन पर गिरे तो कुछ नम जमीन पर गिरकर अंकुरित हो गए, चट्टान होने के कारण कुछ बीजों की जड़ें ज्यादा परिपक्व नहीं हो पाई इसलिए

वे जल्दी ही सूख गए।शेष बीज उपजाऊ जमीन पर गिरे और उनकी बालियों में दाने भर आए। प्रभु का उपदेश देने वाला गुरू भी बीज बोने वाले किसान की तरह है । वह भक्तों के दिल में परमात्मा का संदेश होता है।उन्हें इन बातो पर दविश्वास नहीं होता है।

क्योकि उन्हे सांसारिक चिंताओं ने वशीभूत किया होता है। इसलिए ज्ञानरूपी बीज तुरंत नष्ट हो जाते हैं। भक्तों का दिल बेहद उपजाऊ होता है । ऐसे भक्त संदेश को श्रद्धा पूर्वक ग्रहण करते हैं।वे स्वयं उसे आनंद की वर्षा में भीगते हैं और औरों को भी भिगोते हैं यह जीवन की सच्चाई है। दुनिया में जितनी अच्छी बातें व संदेश है वे दिए जा चुके हैं अब नया कुछ कहने व देने को बाकी नहीं रहा है। जरूरत है तो केवल उस पर अमल करने की ऐसे कई लोग हैं जो अच्छी किताबें, अच्छे लेख पढ़ते हैं, अच्छे लोगों से मिलते हैं, अच्छी बातें सुनते हैं।

उन्हें पता होता है कि इन बातों को ग्रहण करना जरूरी है। इससे फायदा होगा लेकिन इसके बावजूद वे इसे ग्रहण नहीं करेंगे तभी वह कहते हैं यह बातें अच्छी है लेकिन आज के समय में इनका मेल नहीं, तो कभी कहते हैं अगर मैं इन बातों पर अमल करूंगा तो बहुत नुकसान होगा पीछे रह जाऊंगा। कुल मिलाकर अच्छी बातों को मानने के लिए उनके पास कई तरह के बहाने होते हैं। यही वजह है कि ज्ञान का बीज उनके अंदर नहीं पनप नहीं पाता।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

गांव पहुँचे तो इस बार लोगों की भीड़ पिछली बार से दुगुनी हो गई थी। पौष्टिक आहार व वस्त्रों के वितरण की बात आग की तरह फैल गई थी। लोग दूर–दूर से चलकर यहां एकत्र आये थे। कलक्टर भी सपत्नी पहुँच गये तो कैलाश को प्रसन्नता हो गई, उसने मन ही मन महन्त को धन्यवाद दिया।

कैलाश हाथ जोड़ कर, उनके चरणों में नतमस्तक होने लगा तो उन्होंने उसे थाम कर गले लगा लिया और जेब में जितने रुपये थे सब उसे देते हुए कहा कि –सेवा में काम ले लेना। लगभग ढाई हजार रु. थे। इस बार उदयपुर से ही छाछ बनाने के लिये एल्यूमीनियम का बड़ा सा मटका और बिलौनी ले आये थे। दूध के पाउडर को गर्म कर उसका दही जमाने को रखने के लिये पहले ही कह दिया था।

समूचा कार्य इस बार पूर्व की अपेक्षा ज्यादा व्यवस्थित तरीके से हो रहा था। कलेक्टर बहुत प्रभावित हो रहे थे, बार–बार प्रशंसा कर रहे थे। उन्होंने कैलाश से पूछा कि आपका कार्यालय कहां है? कैलाश हंस पड़ा और बोला कार्यालय तो है ही नहीं, से.5 में एक छोटा सा क्वार्टर किराये पर ले रखा है जिसमें वह रहता है और वहां से सारा कार्य होता है।

कलेक्टर आश्चर्यचकित हो गये, बोले इतना भारी कार्य कर रहे हो और कार्यालय तक नहीं सरकार से जमीन मांग कर कार्यालय क्यूं नहीं बनाया? कैलाश ने कहा–हमारी तो कोई सिफारिश भी नहीं, सेवाभावी लोगों से ही मांग–तांग कर सारा कार्य करते हैं। इस पर कलेक्टर ने कहा–यह 6 फीट का आदमी आपके सामने खड़ा है, यह है ना आपकी सिफारिश, मैं यू.आई.टी. का भी चेयरमैन हूं, अभी मुझे आवेदन पत्र दो। जब कलेक्टर स्वयं आगे होकर इतनी बात कह रहे हैं तो कैलाश ने तुरन्त वहीं एक कागज लेकर जमीन हेतु आवेदन लिख दिया। कलेक्टर ने आवेदन देख कर कहा कि इस पर रजिस्ट्रेशन नं. लिखो, कैलाश ने कहा कि रजिस्ट्रेशन ही नहीं है तो नम्बर कहां से आयगा? कलेक्टर फिर अचरज में पड़ गये, बोले –क्यूं नहीं करवाया? उसके पास कोई जवाब नहीं था, बोला कभी जरूरत ही महसूस नहीं हुई। कलेक्टर की भरसक कोशिश की जितनी मदद हो की जाये मगर नियमों की खानापूर्ति तो आवश्यक थी। उन्होंने अपनी लाचारी प्रकट करते हुए कहा कि बिना रजिस्ट्रेशन के तो वे जमीन नहीं दे सकते। यह कह कर वे चुप हो गये। थोड़ी देर सोचने के बाद बोले कि उदयपुर में प्रताप नगर में ओफिस है, वहां वे फोन कर देंगे, आप मामूली औपचारिकताएं हैं वो पूर्ण कर रजिस्ट्रेशन करवा लो तो जमीन भी मिल जायेगी तथा अन्य कार्यों में भी आसानी हो जायेगी।

अंश - 112

आस की डोर विश्वास की ओर

नारायण सेवा संस्थान ने मेरी आस की डोर विश्वास की ओर मेरी बेटी को नई जिंदगी दी। चिकित्सकों और साधकों ने बहुत ध्यान दिया। परिणाम स्वरूप बेटी को नया जीवन मिल। मैं संस्थान का दिल से बहुत बहुत धन्यवाद करती हूँ। मैं कविता यादव उम्र 23 छत्तीसगढ मुंगेली की रहने वाली हूँ। मेरे पति दुर्गेश यादव दूसरों के खेत में मजदूरी करते हैं। मेरी लड़की गोमिया 3 जन्म से ही एक पैर में टेढ़ेपन से ग्रसित थी। गरीबी के कारण आर्थिक हालात बहुत खराब हैं। लड़की के पैर की परेशानी से सभी बहुत परेशान और निराश थे। उसका बिलासपुर, रायपुर, मुंगेली, कुँवरधर आदि कितनी ही जगहों पर इलाज करवाया। 1 से 2 लाख रुपयों का खर्चा भी हो गया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। फिर एक दिन मेरी दीदी की भांजी ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया और आस्था चैनल के द्वारा पूरी जानकारी मिली। तब हम बच्ची को लेकर उदयपुर आये। संस्थान चिकित्सकों ने जाँच की फिर 2 मार्च 2022 को पहला ऑपरेशन कर प्लास्टर चढ़ाया गया। दूसरा ऑपरेशन 14 मार्च को हुआ और पैर में रिंग लगाई गई। इसके बाद घर लौट गए। एक माह बाद फिर आये और 19 अप्रैल 2022 को तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब बच्ची के पांव की स्थिति में सुधार भी दिख रहा है। हड्डी भी जुड़ रही है। संस्थान का दिल से आभार।

6-से 12 वर्ष तक के बच्चों का आहार

छह से बारह साल तक के बच्चे उस स्थिति में आ जाते हैं, जब वे स्कूल या दूसरी जगह सोशल इंफ्लूएंस में आते हैं। उनके लिए आहार की जानकारी –

दूध से शुरूआत : बच्चों को सुबह–शाम (250–250 एमएल) दूध दें। इसे खीर, दलिया आदि में भी दे सकते हैं। उन्हें रात में सोते समय एक कप (150 एमएल) गुनगुना दूध जरूर पिलाएं। इससे नींद की क्वालिटी में सुधार होता है।

स्कूल के बाद : स्कूल से लौटने पर बच्चों को घी लगी एक से डेढ़ रोटी, दाल,सब्जी, दही या मिक्स वेज रायता आदि खिलाएं।

एक दिन की थाली : इस उम्र में बच्चों को अच्छी डाइट की जरूरत होती है। उन्हें 3–4 रोटी, एक परांठा, 3–4 कटोरी सब्जी, 150–200 एमएल दही, 40–50 ग्राम पनीर आदि दें। इस डाइट को बच्चे के शेडयूल के अनुसार अलग–अलग हिस्से में बांट लें।

जरूरी बातें : बच्चे जो फल–सब्जी या हैल्दी फूड पसंद करते हैं, वह उन्हें खाने दें। उन्हें समझाएं कि उनके टिफिन में रखा फूड कैसे हैल्दी है और बाहरी फूड क्यों नहीं खाएं। रात का खाना उन्हें 8:30 से 9:00 बजे तक खिला दें। इस मौसम में तला–भुना आहार न दें, बल्कि उबला हुआ या जल्दी पचने वाली डाइट दें।

अभी ये दे सकते हैं : आम का पना, नींबू पानी, बील का शर्बत, लौकी–खीरे की पूरी, पनीर, चीला आदि दें। फल काटकर देने की बजाय साबुत दें। बच्चों को बीच–बीच में ड्राय फ्रूट्स भी देते रहें। खाते समय ध्यान देने के लिए कहे, अच्छी आदत विकसित होगी।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

गरीब परिवारों को राशन वितरण

संस्थान के मानव मन्दिर परिसर में 6 मई को पूर्व पंजीकृत विधवा, आदिवासी, मजदूर, बेरोजगार एवं गरीब परिवारों को मई माह का मासिक राशन वितरण किया गया। निदेशक वंदना जी अग्रवाल की टीम ने एक माह की खाद्य सामग्री के 91 किट इन परिवारों को प्रदान किये। लाभान्वित होने वाले अधिकतर वे परिवार थे जो कोरोना काल से अब तक बेरोजगार हैं।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

प्रभु की कृपा से शुभकामना परिवार को आज दिनांक 11.5.2020 को परम् पिता परमात्मा की कृपा से कुछ संस्मरण जीवन के लिखवा रहा हूँ। आप सभी को मंगलकामनाएं। समय का पहिया चलता रहा। समय पर अपन कुछ सदुपयोग कर सकते हैं कुछ कार्य कर सकते हैं। ना समय को रोक सकते, ना इसको कम कर सकते हैं, ना इसको ज्यादा कर सकते हैं। भूतकाल में विचरण तो कर सकते हैं, लेकिन भूतकाल में कर्म नहीं कर सकते। भूतकाल जो गया, जो गया। पास्ट इज केंसल्ड चेक। ऐसा केंसल्ड चेक कोई भी बैंक वाला पेमेन्ट उसको रखकर देंगे नहीं।

लाला–बाबू आपश्री माताएं–बहनें–बन्धुओं कल्पना 19 साल की हो गई थी। मीरा गर्ल्स कॉलेज से बी.ए. कर लिया था। भगवान की परम् कृपा से स्टेट बैंक ऑफ इण्ड़िया के जनरल मैनेजर साहब गुजरात के जी.एम आदरणीय सत्यनारायण जी गोयल साहब के सुपुत्र माननीय सुनील जी गोयल साहब के साथ अजमेर में विवाह हुआ। बहुत उपकार मानता हूँ परम् पूज्य स्वर्गीय सागर जी का जो अंतरिक्ष से हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। उन्होंने सारी जिम्मेदारियाँ अपने पर ली। जियाजी अजमेर आकर के विवाह करना हैं, आप चिंता मत कीजिये। सारी व्यवस्था हम कर लेंगे। आप तो एक बार दो–बार बीच में पधार जाना, और फिर विवाह के 4–5 दिन पूर्व पधार जाना। वास्तव में उन्होंने की। अच्छी से अच्छी व्यवस्था हुई।

मंगलमय कार्य जो अंतरिक्ष से आशीर्वाद दे रहे। सत्यनारायण जी गोयल साहब उनका उपकार नहीं भूल सकते हैं। बहुत प्रेम रखते थे। विवाह के उन दो–तीन दिनों में इसी विवाह के मांगलिक कार्यक्रम में उनसे जब मिलने गया। उन्होंने कहा– आप नारायण सेवा करते हैं कैलाश जी, परोपकार करते हैं। ये 5000 रुपया आप किसी भले काम में लगा दीजिऐगा। मैंने कहा– साहब नारायण सेवा के लिए दे रहे हैं। तो मैं लूंगा अन्यथा निजी कार्य के लिए तो आपसे रुपये नहीं ले सकता। आप मेरी पुत्री के ससुर साहब है। पाँच हजार रुपये की रसीद दी। इधर राधेश्याम जी बड़े भाईसाहब आप दीजिए। बोले– ब्याही जी साहब से ले लिये। मैंने कहा साहब उन्होंने चलाकर के दिये। मैंने कहा– नहीं। मैंने प्रेरणा दी नहीं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 465 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023